International Journal of Sanskrit Research 2016; 2(5): 69-71

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(5): 69-71
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 15-07-2016
Accepted: 16-08-2016

सरोज कुमारी
शोध–छात्रा (पी.एच.डी)
संस्कृत–विभाग हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, भारत, शिमला, भारत।

Correspondence
सरोज कुमारी
शोध–छात्रा (पी.एच.डी)
संस्कृत–विभाग हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, भारत, शिमला, भारत।

पुराणों में गंगा माहात्म्य

सरोज कुमारी

सारांश
भारतीय विचारधारा में गंगा के प्रति राष्ट्र के हृदय में इतनी गहरी आस्था है कि वह सभी नदियों को गंगा के समान समझकर गंगा की पवित्रता और महिमा के भाव से भावित होकर भक्त उसके निर्मल जल में स्नान कर अपने जीवन को धन्य बनाते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण के मुखारविन्द से निःसृत अमृत वाग्धारा श्रीमद्भगवद्गीता के माहात्म्य में गीता के ज्ञान–प्रवाह को भी गंगा सदृश स्वीकार किया गया है– गीतागंगोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते। जहाँ–जहाँ, जिन–जिन क्षेत्रों में उनकी गति होती है, वे सभी क्षेत्र उनके प्रभाव से सिद्धक्षेत्र तपोवन बन जाते हैं। कलिकाल में भगीरथी की विशेष महिमा बतायी गयी है। गंगा जी के सेवन से अर्जित पुण्यों का उदय होता है। इस त्रिलोकी में त्रिदेवस्वरूपिणी गंगा जी के समान फलदायी और कल्याणकारी कोई नहीं है, वे भोग एवं मोक्ष को प्रदान करने वाली हैं। गंगा जी की अलौकिक महिमा को श्रद्धा विश्वासपूर्वक स्वीकार करना चाहिये।

पुराणों में गंगा माहात्म्य
भारत एक धर्म प्रधान देश है। धर्म हमारी पूजा पद्धति, रीति–रिवाज, संस्कार, खान–पान, वेशभूषा, सामाजिक व्यवहार सभी का परिचायक है। हमारी प्रकृति और जीवन पद्धति के मूल में जल है। अतः हमारे जीवन में नदियों का विशेष महत्त्व है। भगवती गंगा जी की पावन महत्ता से वेद, शास्त्र, उपनिषद्, पुराण, रामायण भरे पड़े हैं। वैदिक वाङ्मय में पुण्यसलिला देवी गंगा जी का गौरवगान हुआ है। विश्व साहित्य के प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद के प्रसिद्ध नदी सूक्त इमं मे गङ्गे[1] में गंगा जी सभी नदियों में अग्रणी स्थान पर हैं। श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार गंगा सभी नदियों में श्रेष्ठ हैं, क्योंकि भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में स्वयं को पवित्र करने वालों में वायु, शस्त्रधारियों में राम, मछलियों में मगर तथा नदियों में गंगा कहा है। अर्थात् स्पष्ट है कि भगवान् श्री कृष्ण तथा देवी गंगा अभिन्न हैं।

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृताहम्।
झषाणां मकरश्चास्मि स्त्रोतसामस्मि जाह्नवी।।[2]

महाभारत के अनुसार गंगा जी को सर्वतीर्थमयी गंगा[3] कहा गया है। पौराणिक साहित्य में अनेक स्थानों पर गंगाजी के अर्थ, उत्पत्ति तथा महिमा का उल्लेख किया गया है।[4]
नारदपुराण के अनुसार गंगा जी के विषय में बताया गया है कि जब सूर्य मेष, तुला और मकर राशि को जब संक्रमित किया करता है, उस समय गंगाजल का सेवन समस्त जगत् को पवित्र करने वाला होता है।

सेयं गङ्गा महापुण्या नदी भक्त्या निषेविता।
मेषतौलिमृगाकेषु पावयत्यखिलं जगत्।।[5]

गंगा यमुना का संगम जहाँ पर हो, वह स्थान प्रयाग, काशी से भी अधिक बढ़कर है; जिसके केवल दर्शन मात्र से ही श्रेष्ठ गति की प्राप्ति हो जाती है।

गंगायमुनोयोर्योगोऽधिकः काश्या अपि द्विज।
यस्य दर्शनमात्रेण नरा यान्ति परां गतिम्।।[6]

पद्म पुराणानुसार उल्लेख है कि अगर कोई भी व्यक्ति एक बार गंगा पर जाकर स्नानादि करता है, उसके समस्त पूर्वज पवित्र हो जाते हैं। यह एक महान् पुण्य है कि वह स्वयं गंगा–स्नान करके तर

जाता है और अपने पूर्वजों को भी तार देता है। गंगा जी के गुणों का पूर्ण रूप से कोई वर्णन नहीं कर सकता। इनके गुणों की अपार महिमा है, जिनका वर्णन भगवान् ब्रह्मा चार मुख होते हुये भी नहीं कर सकते।

एको गच्छति गंङ्गा यः पूजन्ते तस्य पुरुषाः।
एतदेव महापुण्यं तरते तारयत्यपि।।
गंङ्गाकृत्स्नगुण वक्तु न शक्तश्चतुराननः।
अतः किञ्चिद्वदाम्यत्र भागीरथ्या द्विजा गुणम्।।[7]

जो व्यक्ति भक्ति भाव से एक बार माँ गंगा का दर्शन करते हैं, वे योग्य पदार्थों से तथा अनेक अलङ्कारों से पूजित एवं विख्यात हो जाते हैं तथा उनके लाख कुलों को यह संसार के सब कष्टों से मुक्त कर देती है।

भवन्ति ते सुविख्याता भोग्यालंकारपूजिताः।
दर्शने क्रियते गंगा सकृद्भक्त्या नरैस्तुयैः।।
तेषां कुलानां लक्ष तु भवतारयते शिवा।।[8]

वे देश, जनपद, पर्वत और आश्रम पुण्यमय हैं, जिनके मध्य त्रिपथगामिनी गंगा है, जो सरिताओं में श्रेष्ठ है।

ते देशास्ते जनपदास्ते शैलास्तेऽपि चाश्रमाः।
पुण्यास्त्रिपथगा येषा मध्ये नित्यं सरिद्वरा।।[9]

स्कन्दपुराण के अनुसर भगवान् श्री स्कन्द ने कहा है कि गंगा मेरी ही एक जलरूपी दूसरी मूर्ति है, जो शिवात्मिका है। यह अनेक ब्राह्मण्डों की आधार और परा प्रकृति है।

ममैव सापरामूर्तिस्तोयरूपा शिवात्मिका।
ब्रह्माण्डानामनेकानामाधारः प्रकृतिः परा।[10]

यह शुद्ध विद्या स्वरूप वाली, तीन शक्तियों से युक्त, करुणात्मिका, आनन्द अमृत रूप वाली तथा शुद्ध धर्म रूपी है। इस परमब्रह्म स्वरूप वाली समस्त जगत् की धात्री को भगवान् अपनी लीला से जगत् के कल्याण के लिये धारण किया करते हैं।

शुद्धविद्यास्वरूपा च त्रिशक्तिः करुणात्मिका।
आनन्दामृतरूपा च शुद्ध धर्मस्वरूपिणी।।
यामेतां जगतां धात्रीं धारयामि स्वलीलया।
विश्वस्य रक्षणार्थाय परमब्रह्म स्वरूपिणीम्।।[11]

सतयुग में ध्यान की ही मुख्यता थी। त्रेतायुग में तपस्या प्रधान थी। द्वापर युग में ध्यान एवं तप दोनों की ही प्रधानता थी परन्तु अब इस घोर कलियुग में केवल गंगा ही सबके उद्धार के लिये हैं।

ध्यानं कृते मोक्षहेतुस्त्रेतायां तच्चैव तपः।
द्वापरे तद्द्वयं यज्ञः कलौ गंगैव केवलम्।।[12]

यह देवी प्राणियों को इस लोक में और परलोक में दोनों ही जगह फल प्रदान करने वाली है। यह व्यक्ति के भावों के अनुसार सदा ही सम्पूर्ण जगत् के हित करने में तत्पर रहती हैं।

गंगा हि सर्वभूतानामिहामुत्र फल प्रदा।
भावानुरूपतो विष्णु सदा सर्वजगद्धिता।।[13]

जिस प्रकार व्यक्ति के द्वारा बिना इच्छा के अग्नि का स्पर्श हो जाने पर अग्नि उसे जला देती, उसी प्रकार बिना इच्छा के भी गंगा में स्नान करने वालों के पापों को गंगा जी भस्म कर देती है, क्योंकि गंगाजल का प्रभाव अग्नि की तरह अचूक होता है।

अनिच्छयापि संस्पृष्टो दहनोहियथादहेत्।
अनिच्छयापिसंस्नातागंगापापंतथादहेत्।।[14]

सूर्योदय होने पर जिस प्रकार अन्धकार दूर हो जाता है, वज्रपात से पर्वत टुकड़े–टुकड़े हो जाते हैं, गरुड़ के भय से सर्प भयभीत हो जाते हैं, वायु से मेघ आहत हो जाते हैं, तत्त्व ज्ञान हो जाने पर मोह भंग हो जाता है तथा सिंह के भय से मृग भाग जाया करते हैं, उसी प्रकार गंगा जी के दर्शन मात्र से ही व्यक्ति के समस्त पाप क्षणभर में ही क्षय हो जाया करते हैं।

सूर्योदये तमांसीववज्रपातभयन्नगाः।
ताक्ष्यैक्षणाद्यणा सर्पा मेघा वातहता इव।।
तत्त्वज्ञानाद्याथामोहः सिंहदृष्ट्वायथामृगाः।
तथा सर्वाणि पापानियान्ति गंगेक्षणात्क्षयम्।।[15]

जिस प्रकार तपों में प्राणायाम् श्रेष्ठ माना जाता है, सब मन्त्रों में प्रणव मन्त्र, सब धर्मों में अहिंसा, सब काम्य पदार्थों में वरा (पार्वती) सर्वोत्तम मानी जाती है, सब विद्याओं में आत्म–विद्या, स्त्रियों में गौरी उत्तम मानी जाती है, समस्त देवों में जैसे भगवान् श्री हरि सर्वश्रेष्ठ देव हैं तथा सब पात्रों में भगवान् शिव का भक्त श्रेष्ठ होता है, उसी प्रकार सभी तीर्थों में गंगा तीर्थ विशिष्ट माना जाता है।

प्राणायामश्च तपसा मन्त्राणां प्रणवो यथा।
धर्माणामप्यहिंसा च काम्यानां श्रीर्यथावरा।।
यथात्मविद्यानां स्त्रीणां गौरी यथोत्तमा।
सर्वदेवगणानाञ्च यथा त्वं पुरुषोत्तम।।[16]

गंगा जी की महिमा पर हमें आश्चर्य करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह तो साक्षात् भगवान् के चरणों से प्रकट हुई हैं। अर्थात् उस अनन्त के चरणों से प्रकट होने के कारण माता की महिमा भी अनन्त है।

न ह्येतत् परमाश्चर्यं स्वर्धुन्या यदिहोदितम्।
अनन्तचरणाम्भोजप्रसूताया भवच्छिदः।।[17]

जिन अनन्त स्वरूप भगवान् के चरण–कमलों में श्रद्धापूर्वक भलीभान्ति चित्त को लगाकर निर्मल ह्रदय वाले मुनिगण तुरन्त ही दुस्त्यज त्रिगुणों के प्रपञ्च को त्यागकर उनके स्वरूप बन गये हैं, उन्हीं के चरण–कमलों से उत्पन्न हुयी, भव–बन्धन को काटने वाली भगवती गंगा जी का माहात्म्य बताया गया है।

सन्निवेश्य मनो यस्मिञ्छ्रद्धया मुनयोऽमलाः।
त्रैगुण्यं दुस्त्यजं हित्वा सद्यो यातास्तदात्मताम्।।[18]

गंगा जी तीर्थों में सर्वोत्तम, नदियों में महानदी और महान् से महान् पापी प्राणियों के लिये मोक्षदायिनी हैं।

तीर्थानां तु परं तीर्थं नदीनां तु महानदी।
मोक्षदा सर्वभूतानां महापातकिनामपि।।[19]

गंगाजी सर्वत्र तो सुलभ है, परन्तु गंगाद्वार, प्रयाग और गंगासागर इन तीनों संगमों में दुर्लभ मानी गयी हैं। इन स्थानों पर स्नान करने से मनुष्य स्वर्गलोक को प्राप्त करके पुनर्जन्म से मुक्त हो जाते हैं।

सर्वत्रसुलभा गङ्गा त्रिषु स्थानेषु दुर्लभा।
गङ्गाद्वारे प्रयागे च गङ्गासागरसङ्गमे।
तत्र स्नात्वा दिवं यान्ति ये मृतासतेऽपुनर्भवाः।।[20]

जिन मनुष्यों का चित्त पाप से आच्छादित है, जो अपने उद्धार के लिये गति की खोज में हैं, उन सभी प्राणियों के लिये गंगा के समान दूसरी गति नहीं है। महेश्वर की जटाजूट से च्युत हुयी

मंगलमयी गंगा समस्त पापों का हरण करने वाली हैं। वे पवित्रों में परम पवित्र और मंगलों में मंगलस्वरूपा बतायी गयी हैं।

सर्वेषामेव भूतानां पापोपहतचेतसाम्।
गतिमन्विष्यमाणानां नास्ति गंगासमा गतिः।।
पवित्राणां पवित्र च मंगलानां च मंगलम्।
महेश्वरशिरोभ्रष्टा सर्वपापहरा शुभा।।[21]

देवता, दानव, गन्धर्व, ऋषि, सिद्ध और चारणादि सभी गंगा–यमुना के संगमभूत तीर्थ का सदैव सेवन किया करते हैं।

देवदानवगन्धर्वा ऋषयः सिद्ध चारणाः।
सदासेवन्ति तत् तीर्थं गंगायमुनासंगमम्।।[22]

इसके संगम स्थल पर प्राण छोड़ने वाले को वही गति प्राप्त होती है, जो योगनिष्ठ एवं सत्यपरायण विद्वान को प्राप्त होती है।

सा गतिर्योगयुक्तस्य सत्यस्थस्य मनीषिणः।
सा गतिस्त्यजतः प्राणान् गंगायमुनासङ्गमे।।[23]

गंगा में जहाँ कहीं भी स्नान किया जाये, वहाँ गंगा कुरुक्षेत्र के समान फलदायिनी मानी गयी हैं, परन्तु जहाँ पर वह विन्ध्यपर्वत से संयुक्त हैं, वहाँ पर गंगा जी कुरुक्षेत्र से दस गुना अधिक फल देने वाली कही गयी हैं।

कुरुक्षेत्रसमा गङ्गा यत्र यत्रावगाह्यते।
कुरुक्षेत्राद् दशगुणा यत्र विन्ध्येन सङ्गता।।[24]

जहाँ पर बहुत से तीर्थों से संयुक्त होकर महाभागा तपस्विनी गङ्गा जी बहती हैं, उस क्षेत्र को सिद्धक्षेत्र के समान मानना चाहिये, इस पर अन्यथा विचार करना अनुचित है।

यत्र गङ्गा महाभागा बहुतीर्था तपोधना।
सिद्धक्षेत्रं हि तज्ज्ञेयं नात्र कार्या विचारणा।।[25]

गंगाजी के अलकनन्दा नामक दक्षिणीय भेद को भगवान शंकर ने प्रीतिपूर्वक सौ वर्षों से भी अधिक अपने मस्तक पर धारण किया था। शंकरजी के जटाकलाप से निकलकर उन्होंने सगर के पापी पुत्रों के अस्थिचूर्ण को आप्लवित कर उन्हें स्वर्ग पहुँचा दिया था।

भेदं चालकनन्दाख्यं यस्याः शर्वोऽपि दक्षिणम्।
दधार शिरसा प्रीत्या वर्षाणामधिकं शतम्।।
शम्भोर्जटाकलापाच्च विनिष्क्रान्तास्थिशर्कराः।
प्लावयित्वा दिवं निन्ये या पापान्सगरात्मजान्।।[26]

इसके जल में स्नान करने से समस्त पापों की शीघ्र ही समाप्ति हो जाती है और अपूर्व पुण्यों की प्राप्ति होती है।

स्नातस्य सलिले यस्याः सद्यः पापं प्रणश्यति।
अपूर्वपुण्यप्राप्तिश्च सद्योमैत्रेय जायते।।[27]

इसके तट पर राजाओं ने महायज्ञों से यज्ञेश्वर भगवान् पुरूषोत्तम का यजन करके इहलोक तथा परलोक में परमसिद्ध का लाभ प्राप्त किया है।

यस्यामिष्ट्वा महायज्ञैर्यज्ञेशं पुरूषोत्तमम्।
द्विज भूपाः परांसिद्धिमवापुर्दिवि चेह च।।[28]

जो व्यक्ति गंगा जी का श्रवण, इच्छा, दर्शन, स्पर्श, जलपान, स्नान तथा यशोगान करता है, उसे यह पवित्र करती है।

श्रुताऽभिलषिता दृष्टा स्पृष्टा पीताऽवगाहिता।
या पावयति भूतानि कीर्तिता च दिने दिने।।[29]

गंगा नाम का उच्चारण सौ योजन दूरी से करने पर भी जीव के तीनों जन्मों के संचित पाप भी नष्ट हो जाते हैं, क्योंकि त्रिलोकी को पवित्र करने में भगवती गंगा जी समर्थ हैं।

गङ्गा गङ्गेति यैर्नाम योजनानां शतेष्वपि।
स्थितैरुच्चारितं हन्ति पापं जन्मत्रयार्जितम्।।
यतः सा पावनायालं त्रयाणां जगतामपि।[30]

निष्कर्ष

अतः स्पष्ट होता है कि पुराणों में भगवती गंगा की महिमा अपार है। इसका अनिर्वचनीय माहात्म्य है। इसमें भव के जीवों को भवसागर से पार करने की अद्भुत शक्ति भरी पड़ी है। इसके दर्शन, स्पर्श, पान, नामोच्चारण तथा स्मरणमात्र से प्राणी सर्वपापों से तत्काल मुक्त हो जाते है। गंगा स्नान की महिमा बहुत अद्भुत है। सिंह दर्शन से जिस प्रकार मृग भागते हैं, उसी प्रकार गंगावासी तथा श्रद्धा–भक्ति से युक्त जो गंगा में अवगाहन (स्नान) करते हैं, उनके पाप भी डर कर भाग जाते हैं। भारतीय वाङ्मय में कलिमलनाशिनी गंगा जी की अपार महिमा है। भारतीय संस्कृति की विरासत को अक्षुण्ण रखने वाले प्रमुख आधार–स्तम्भों में भगवत्पदी गंगा का स्थान महत्त्वपूर्ण है। मानवी काया के लिये हृदय की तरह आर्यावर्त के लिये गंगा की महत्ता है। मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन में सुरसरिता के अप्रतिम अवदान को दृष्टिगत रखते हुये मनीषियों ने उन्हें मातृगौरव प्रदान किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. ऋग्वेद, 10/75/5
2. श्रीमद्भगवद्गीता, 10/31
3. महाभारत (भीष्मपर्व), 43/2
4- Saroj Kumari, Purananusar Ganga Nadi: Ek Parichay. Research Inspiration Journal. 2016; 1(4):85-90
5. नारद महापुराण (प्रथम खण्ड), 6/29
6. नारद महापुराण (प्रथम खण्ड), 6/41
7. पद्म महापुराण (सृष्टि खण्ड), 27/9–10
8. पद्म महापुराण (सृष्टि खण्ड), 27/17–18
9. पद्म महापुराण (भूमि खण्ड), 44/18
10. स्कन्द महापुराण (काशी खण्ड), 20/7
11. स्कन्द महापुराण (काशी खण्ड), 27/8–9
12. स्कन्द महापुराण (काशी खण्ड), 27/19
13. स्कन्द महापुराण (काशी खण्ड), 27/23
14. स्कन्द महापुराण (काशी खण्ड), 27/49
15. स्कन्द महापुराण (काशी खण्ड), 27/59–60
16. स्कन्द महापुराण (काशी खण्ड), 27/71–72
17. श्रीमद्भागवत महापुराण, 9/9/14
18. श्रीमद्भागवत महापुराण, 9/9/15
19. मत्स्य महापुराण, 106/53
20. मत्स्य महापुराण, 106/54
21. मत्स्य महापुराण, 106/55–56
22. मत्स्य महापुराण, 106/14
23. मत्स्य महापुराण, 106/24
24. मत्स्य महापुराण, 106/49
25. मत्स्य महापुराण, 106/50
26. विष्णु पुराण (द्वितीय अंश), 8/114–115
27. विष्णु महापुराण (द्वितीय अंश), 8/116
28. विष्णु महापुराण (द्वितीय अंश), 8/118
29. विष्णु महापुराण (द्वितीय अंश), 8/120
30. विष्णु महापुराण (द्वितीय अंश), 8/121–122